

## Оглавление

|  |                |
|--|----------------|
| Введение.....  |                |
| <b>Глава I</b>   |                |
| О единстве в русской идее.....   | 1              |
| <b>Глава II</b>  |                |
| Проблема целостности в русской религиозно-философской традиции. Ближайшие затруднения..... | 3'             |
| <b>Глава III</b>   |                |
| Целостность и трагический разлад в мироощущении (О А.С.Хомякове и Н.А.Бердяеве).....       | 4              |
| <b>Глава IV</b>  |                |
| В.С.Соловьев о жизненной драме Платона.....  | 5              |
| <b>Глава V</b>   |                |
| Трагедия философии и философия трагедии.....   | 7              |
| <b>Глава VI</b>  |                |
| Метафизика судьбы в историософии Николая Бердяева.....                                     | 9              |
| <b>Глава VII</b>   |                |
| Об осмыслении В.В.Зеньковским духовной целостности.....                                    | 1              |
| <b>Глава VIII</b>  |                |
| О развязке истории в историософии В.В.Зеньковского.....                                    | II             |
| <b>Глава IX</b>  |                |
| Преодолима ли трагичность? (Б.П.Вышеславцев о вечном в русской философии).....             | *..... 1       |
| <b>Глава X</b>   |                |
| О триединстве в методологии Павла Флоренского.....   | Г              |
| Заключение.....  | 1              |
| Литература.....  | 2'             |
| Примечания.....  | 2 <sup>1</sup> |